सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री चित्रण
(विशेष संदर्भ : 21 श्रेष्ठ कहानियाँ)

शोध सारांश

आठवें दशक की समकालीन महिला कथाकार सुधा अरोड़ा का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी कहानियों में हर स्तर की महिलाओं की समस्याओं से संघर्ष करते हुए दिखाया है। किस प्रकार हमारा भारतीय समाज स्त्री-पुरुष के बीच लैंगिक भेद-भाव करता है और इसका खामियाजा अधिकतर उन निचले तपके के स्त्री को भुगतना पड़ता है, जो श्रम करके अपनी आजीविका ही चला पाती हैं।

सुधा अरोड़ा की कहानियों में लैंगिक भेद-भाव के साथ ही पितृसत्ता का भी वर्चस्व देखने को मिलता है, जो स्त्रियों को सिर्फ दासी बनाकर रखना चाहता है, उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचल देता है। आधुनिक पारंपरिक पितृसत्तात्मक समाज में तो बदलाव आया है, लेकिन पुरुष वर्चस्व स्त्रियों का अन्य रूपों में शोषण करने लगा है। स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तो हो रही हैं, लेकिन उन्हें दोहरी-तिहरी जिम्मेदारी में जकड़ दिया गया है। सुधा जी की कहानियों में निम्न, मध्यवर्गीय शिक्षित और अशिक्षित कामकाजी घरेलू महिलाओं की समस्या का वर्णन किया गया है। उन पर किस तरह का शोषण किया जाता है ? आधुनिक समाज में शोषण करने के स्तर में भी बदलाव आया है। शिक्षित परिवार एवं संभ्रांत परिवार में स्त्रियों को मानसिक रूप से शोषण का शिकार होना पड़ता है। वहीं निम्न वर्गीय एवं कामकाजी घरेलू महिलाओं को शारीरिक हिंसा का शिकार होना पड़ता है, जिसके निशान दिखाई देते हैं। आम बोलचाल की भाषा में एक प्रचलित कहावत है कि बाहर का घाव तो भर जाता है, लेकिन मानसिक रूप से दी गई घाव कभी नहीं भर सकता।

सुधा जी की कहानियों में भ्रूण हत्या एवं दहेज का भी वर्णन किया गया है। पितृसत्तात्मक समाज पहले तो वंश को आगे बढ़ाने के लिए कन्या भ्रूण हत्या करता है, दूसरी प्रचलित मान्यता है कि समाज में दहेज का प्रभाव है, जिससे महिलाएँ ही कन्या को नहीं जन्म देना चाहती हैं, क्योंकि शादी के बाद लड़की के ससुराल वाले दहेज के नाम पर लड़की का शोषण तो करते ही हैं और कई बार उसे जान से भी मार देते हैं, इसलिए ऐसा समाज बालिका की जगह बालक के जन्म की चाह रखता है।

अध्याय एक में सुधा अरोड़ा के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में उनके साठोत्तरी हिंदी कहानियों में महत्व एवं योगदान का वर्णन किया गया है। अध्याय दो में पुरुष एवं स्त्री पात्र केंद्रित कहानियों में महिला एवं पुरुष को किन-किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है ? पितृसत्तात्मक व्यवस्था किस प्रकार उनका उनका शोषण कर रहा है ? इनका उल्लेख किया गया है। अध्याय तीन में मध्ययुगीन संस्कारों की चर्चा की गए है। साथ ही आधुनिकता के जाल ने महिलाओं को किस प्रकार दोहरी-तेहरी जिंदगी जीने को मजबूर कर दिया है तथा घर एवं बाहर किस प्रकार महिलाएं संघर्ष कर रही हैं ? आदि का वर्णन किया गया है । अध्याय चार में सुधा जी की कहानियों में किस प्रकार स्त्री, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था से संघर्ष कर रही हैं, वह कहाँ तक सफल हो पाईं हैं का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सुधा अरोड़ा के कहानी संग्रह '21 श्रेष्ठ कहानियां' को आधार बनाकर लिखा गया है। उनकी कहानियों में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं की समस्या एवं संघर्ष का चित्रण किया गया है।

इस प्रकार से सुधा जी अपनी कहानियों में स्त्री समस्या एवं संघर्ष का चित्रण किया है और इन समस्याओं को दूर करने के लिए स्त्रियों को जागरूक करने का प्रयास किया है।